ABSTRACT of the Ph.D. Thesis

Name of the Scholar : KUL BHOOSHAN TRIPATHI
Name of the Supervisor : Prof. M. P. SHARMA
Department : Department of Hindi

Title of Thesis : BHOOMANDALIKARAN AUR HINDI KAVITA (SAN 1991 SE ADYATAN)

Five Keyword : Bhoomandalikaran, Hindi Samaj, Hindi Kavita,Samvedana, Shilp.

भूमण्डलीकरण और हिन्दी कविता (सन् 1991 से अद्यतन)

भूमण्डलीकरण शब्द में 'भू' का अर्थ होता है-भूमि, एवं 'मंडलीकरण' का अर्थ होता है-समाहित करना। इस प्रकार भूमण्डलीकरण का अर्थ हुआ-विश्व की संपूर्ण भूमि का एक परिधि में समा जाना। विश्व के समस्त देशों का अपनी सीमाओं को पारकर आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में परस्पर सहयोग हेतु एक साथ आ जाने को ही भूमण्डलीकरण कहते हैं। एक तरफ इसे सारी दुनिया की विकल्पहीन अवस्था के रूप में प्रसारित एवं प्रचारित किया जा रहा है, तो दूसरी ओर विश्वभर में इसके विरोध में आवाजें उठ रही हैं। भूमण्डलीकरण का वैचारिक आधार वाशिंगटन आम राय है जिसका प्रतिपादन जॉन विलियम्सन ने 1989 में किया था। भूमण्डलीकरण के समर्थक विद्वानों के अनुसार, दीर्घकालिक प्रक्रिया में भूमण्डलीकरण प्रत्येक स्तर पर प्रत्येक व्यक्ति को समान बना देगा। यह समूचे विश्व में व्यापार, पूंजी निवेश, रोजगार और आय के अवसर बढ़ाएगा। विद्वानों का दूसरा वर्ग भूमण्डलीकरण को पहली दुनिया के देशों द्वारा तीसरी दुनिया के देशों पर थोपा गया प्रभुत्व मानता है। भूमण्डलीकरण के दौर में बाजार की शक्तियों के माध्यम से पूँजी अपना निर्बाध खेल खेलती है। यह पूँजी सामाजिक सरोकारों के प्रति संवेदनशील नहीं होती। ऐसे संवेदनहीन चरित्र के फलस्वरूप ही भूमण्डलीकरण चिंता का विषय है।

भूमण्डलीकरण को समझने के लिए उदारीकरण और निजीकरण की सैद्धान्तिकी को समझना आवश्यक है। उदारीकरण का अर्थ ऐसी प्रक्रिया से है जिसमें अर्थव्यवस्था को विविध सरकारी विनिमयों जैसे औद्योगिक लाइसेंस, वस्तुओं के मूल्य वितरण, सेवा आयात लाइसेंसिंग, विदेशी विनिमय नियमन, पूँजी विषयक मुद्दों, ऋण नियंत्रण, निवेश पर पाबंदी आदि से मुक्त रखा जाता है, ताकि मुक्त व्यापारिक शक्तियों के मार्गदर्शन में अर्थव्यवस्था के विकास एवं संचालन को गति दी जा सके। निजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें अर्थव्यवस्था सम्बन्धी उत्तरदायित्व का स्थानांतरण सरकार से निजी क्षेत्र की ओर होता है। भूमण्डलीकरण सिर्फ आर्थिक परिघटना नहीं है, इसने मनुष्य के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन को भी पूरी तरह से झकझोर दिया है। 24 जुलाई 1991 को भारत में नई अर्थनीति की घोषणा के साथ भूमण्डलीकरण की शुरूआत हुई।

भूमंडलीकरण के दौर में जब हर तरफ मानवता विरोधी शक्तियाँ सक्रिय हैं, ऐसे समय में कविता न सिर्फ मानव विरोधी षड़यंत्रों का खुलासा करती है बल्कि उन पर चोट भी करती है। मानव जीवन में हो रहे परिवर्तनों को रेखांकित करने के साथ ही साथ कविता अंधी दौड़ के विकल्प भी प्रस्तुत करती है। मनुष्यता विरोधी शक्तियों से दो-दो हाथ न कर पाने का दर्द मुखर होकर कविता में व्यक्त हुआ है। भूमण्डलीकरण की आँधी में आम आदमी का बदलता सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों और विकसित

देशों का छद्म, चरम सारहीनता का कोहराम, थोथे जीवन मूल्य, मनुष्य का निरे पशु में तब्दील हो जाना जो जीवन को सिर्फ भोगने में व्यतीत कर रहा है आदि आज की हिन्दी कविता के प्रमुख विषय हैं। यह सब कुछ के तार-तार हो जाने का भूमण्डलीकरण है। इन नकारात्मक परिस्थितियों के सच को उद्घाटित कर कविता अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराती है। यह मनुष्य के भावों, विचारों, संवेदनाओं और सौन्दर्यबोध को परिष्कृत एवं विकसित करती है। मनुष्य की अस्मिता के साथ अपने सनातन सम्बन्ध को निभाती हिन्दी कविता इस अतिविकसित सभ्यता में मनुष्यता को बचाने का कार्य कर रही है।

भूमण्डलीकरण के सामाजिक एवं सांस्कृतिक आयाम उपभोक्तादी संस्कृति, स्त्री विमर्श, दलित चेतना, पर्यावरण की चिंता एवं साम्प्रदायिकता आदि पर प्रस्तुत कविताओं के माध्यम से व्याख्यायित हो रहे हैं। दिखावे की संस्कृति, समाज की समाप्त होती मान्यताएँ एवं संस्थाएँ, मजाक बनती मानवता, हिंसा, घृणा, विद्रूपता, उच्छृंखलता, अंधी दौड़ और स्वार्थ जैसी बुराइयाँ, अधिक से अधिक पाने और भोगने की लालसा, वस्तुओं का आधिक्य, उपभोग का मनुष्य जीवन के अन्य सभी मुद्दों पर हावी होना, मनुष्य का अपनी जड़ों से कटना, नई से नई चीजों के विकल्प, पुरानी वस्तुओं का घटता महत्व और खोता अस्तित्व, वस्तुओं की इस दुनिया में खोकर खुद एक वस्तु में तब्दील होता मनुष्य, चीजों के आधिक्य से गरिष्ठ होता संसार, वस्तुवाद के विभिन्न पहलुओं पर विमर्श, बदलते हुए मानवीय संबंध, दूसरों से मिलने जुलने की समाप्त होती प्रथा, विज्ञापनों का शोर, आम आदमी का असमंजस, सोच और संवेदना पर वस्तुओं का अतिक्रमण, अन्तहीन इच्छायें, इच्छा और जरूरत का द्वन्द, बाज़ार की निर्दयी और निरंकुश सत्ता, यांत्रिक संस्कृति और मानव मन पर बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का बौद्धिक आधिपत्य आज की हिन्दी कविता के प्रमुख विषय हैं। भूमण्डलीकरण के सन्दर्भ में हिन्दी कविता गहरी सामयिक दृष्टि का परिचय देती है। कविता भारतीय समाज में प्रकृति एवं मनुष्य के अन्तर्सम्बन्ध की याद ताजा करके पर्यावरण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करती है। हिन्दी कविता जल, जंगल और जमीन के संकट को उठाती है, विकास के नाम पर आादिवासियों के शोषण और विस्थापन को चित्रित करती है, वन संसाधनों और उत्पादों पर से आदिवासियों के अधिकार छिनने का विरोध करती है और इस प्रकार शेष समाज को आदिवासी जीवन के कष्टों और कठिनाइयों से परिचित कराती है। कविता विकास की अंधी, आधारहीन और अतार्किक दौड़ के विरुद्ध है। ऊपर से नीचे की ओर होने वाले एकांगी, असमन्वित विकास पर कविता चोट करती है। कविता विकास के नाम पर होने वाले विस्थापन पर भी प्रश्नचिह्न लगाती है। यह कैसा विकास है जिसमें गरीब और पिछड़े क्षेत्र और अधिक संसाधनविहीन होते जाते हैं जबकि शहरों और महानगरों की चमक दमक में इजाफा होता जाता है। हिन्दी कविता राजनीतिक आयामों के संदर्भ में भी अपनी गहरी समझ का परिचय देती है। राजनीतिक छद्म, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों की वास्तविकता, धर्म एवं जाति का वोट बैंक में तब्दील होना, राष्ट्र राज्य की सत्ता का कमजोर होना और नवसाम्राज्यवाद एवं नवउपनिवेशवाद की अघोषित नीतियों का मकड़जाल हिन्दी कविता में प्रमुखता से व्यक्त हुए हैं। विषय वस्तु के अनुरूप हिन्दी कविता में प्रस्तुतीकरण के स्तर पर भी बदलाव हुए हैं। शिल्प के अन्तर्गत बिम्ब, प्रतीक, उपमान और भाषा सब पर पाश्चात्य विषयों, विमर्शों और विश्लेषण का प्रभाव स्पष्ट नजर आता है। निष्कर्षत: हिन्दी कविता भूमण्डलीकरण के प्रतिरोध में नजर आती है। यह समाज के जर्जरित मूल्यों को संजोती, हर प्रकार के अन्याय से जूझती कविता है, जो वर्तमान में भी मनुष्यता के पक्ष में खड़ी है।